किनारों पर उगती पहचान—एक समीक्षा

वीणा शिवपुरी

जागोरी की पुस्तकों की श्रृंखला में नई कड़ी है—'किनारों पर उगती पहचान'। राजकमल प्रकाशन द्वारा प्रकाशित व आभा भैया द्वारा सम्पादित यह किताब समाज के हाशिए पर जीने वाली एकल औरतों के जीवन का दस्तावेज है। इसमें जागोरी की कार्यवाही पर आधारित नारीवादी शोध का ब्यौरा है। तीन भागों में बंटी इस किताब के पहले भाग में औरत-औरत के फ़र्क को समझने की कोशिश की है। हमेशा एकता और बहनापे की बात करने वाले महिला आन्दोलन में जब फ़र्कों की बात उठाई जाती है तो वह सुबूत है हिम्मत और आत्मविश्वास का।

किताब के दूसरे भाग में छह एकल औरतों के जीवन की कहानियां हैं। ये जीवनियां जीवन की सच्चाइयों को किताबी धारणाओं से कहीं अधिक समझाती हैं। एकल औरतों की ताक़त और सीमाएं, दुख-दर्द और खुशियां, समाज द्वारा लगाए गए कांटेदार तारों का घेरा सभी कुछ समझ में आने लगता है।

तीसरे भाग में शोध प्रक्रिया की प्रणाली, सर्वे की प्रश्नावली आदि दी गई है।

एकल औरत परियोजना का अतीत वर्तमान बस्ती की ज़मीन पर है। आज वहां अनेक सशक्त एकल औरतें एक जुट होकर एक दूसरे को सहारा दे रही हैं।

इस किताब की भाषा औरतों की भाषा है। जिसमें कविता है लेकिन कड़वी सच्चाइयां कहने की ताक़त भी।

यह किताब एकल औरतों के साथ काम करने वालों के लिए, औरतों तथा उनके संगठनों के लिए तथा उन सबके लिए फ़ायदेमंद साबित होगी जो औरतों के मन की परतों में झांकना चाहते हैं, समाज की उधड़ती सीवन को परखना चाहते हैं। □